ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

हिंदी के क्रिया पद और उनका व्यावहारिक प्रयोग

सारांश

भाषा की एक महत्वपूर्ण इकाई है–क्रियापद। भाषा के कालिक और वाच्य रूप के निर्धारण में क्रियारूपों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। भाषा में निहित गतिशीलता का आधार क्रिया रूप ही होते हैं। क्रिया रूपों के अभाव में भी वाक्य निर्मित होते हैं लेकिन ऐसे वाक्य एक स्थैतिक संरचना होते हैं; जैसे एक निस्पंद व्यक्ति। जड़ होने के बावजूद समस्त प्राकृतिक उपादान नित्यता अथवा गतिशीलता के कारण ही इतने महत्वपूर्ण हैं। फिर, मानव तो चैतन्य है। मानवीय व्यवहार की गतिशीलता का प्रकट रूप भाषा है और प्रत्येक भाषा की गतिशीलता में क्रिया रूपों की महत्ता स्वयंसिद्ध है। हिन्दी के क्रिया रूप अपेक्षाकृत जटिल होते हुए भी अत्यंत रोचक हैं।क्रिया रूपों के सही प्रयोग से भाषा में प्रभावी संप्रेषणीयता और लालित्य उत्पन्न होता है। प्रस्तुत शोध आलेख में हिन्दी के क्रिया रूपों के संरचनात्मक स्वरूप के साथ–साथ भाषा में उनकी सम्यक प्रयुक्ति की विवेचना की गई है।

मुख्य शब्द : स्थैतिक, संप्रेषणीयता, प्रयुक्ति, विकारी, धातु, अकर्मक, सकर्मक, कारक, व्युत्पन्न क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, समस्त क्रिया, क्रियात्मक संज्ञा, समापिका व असमापिका क्रिया, पूर्वकालिक व तात्कालिक क्रिया, वाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य, काल, वृत्ति, पक्ष, अन्वय।

अनूप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर,
राजस्थान

प्रस्तावना

हिन्दी क्रिया रूपों की सम्यक विवेचना निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत की जा सकती है –

1. परिभाषा एवं स्वरूप
2. क्रिया के भेद

क्रिया के भेद

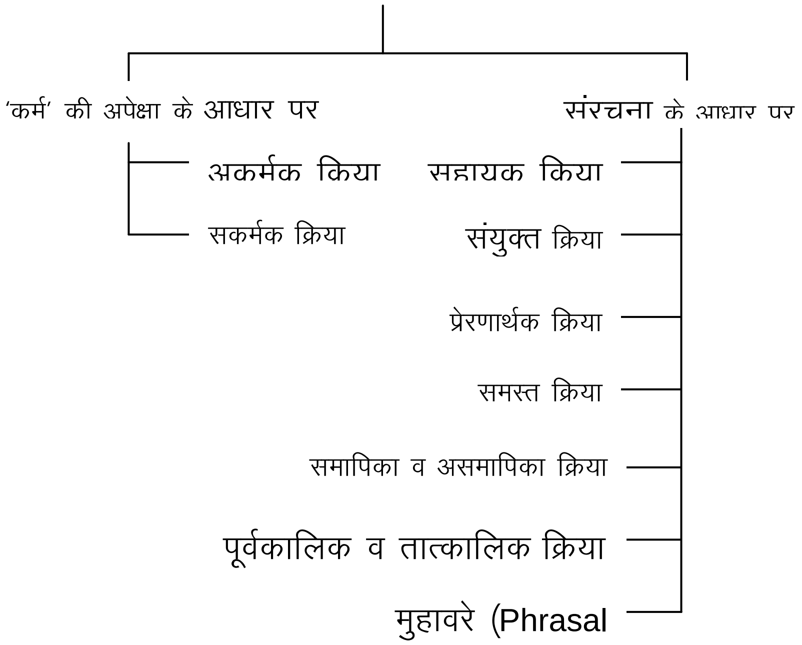

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

3. वाच्य

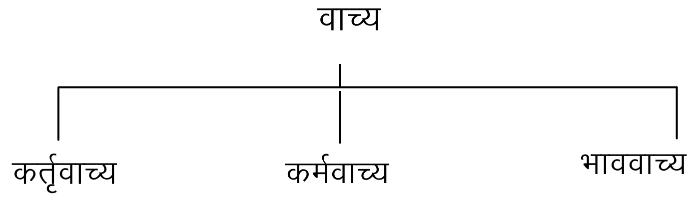

4. काल

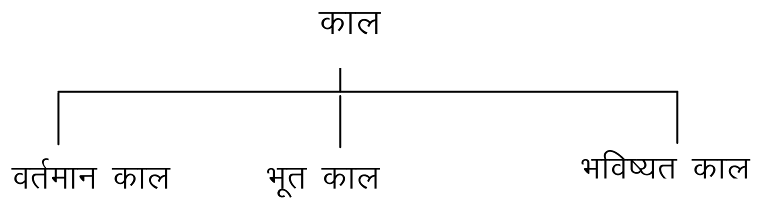

5. पक्ष
6. वृत्ति
7. अन्वय
8. क्रिया के कतिपय अशुद्ध रूप

परिभाषा एवं स्वरूप

वाक्य में प्रयुक्त शब्द मूल रूप में या उनका परिवर्तित रूप 'पद' कहलाते हैं। ये पद किसी न किसी तरह परस्पर संबंधित होते हैं। इन संबंधों का अध्ययन व्याकरण (भाषा शास्त्र) के अंतर्गत किया जाता है। अतः वाक्य में आए पद किसी न किसी व्याकरणिक इकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पदों में कुछ 'विकारी' तो कुछ 'अविकारी' श्रेणी में माने गए हैं। लिंग, वचन, पुरूष, काल, कारक आदि के आधार पर जिन पदों का रूप परिवर्तित होता है वे 'विकारी' और जो अपरिवर्तित रहते हैं उन्हें 'अविकारी' या 'अव्यय' कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया विकारी पद हैं जबकि क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, संबंध बोधक, विस्मय बोधक तथा निपात अविकारी पद हैं।

वाक्य में प्रयुक्त उन शब्दों को '**क्रियापद**' कहा जाता है जो किसी कार्य के होने या करने/कराने का बोध कराते हैं। क्रिया शब्दों का स्वतंत्र अस्तित्व न के बराबर है। वाक्य में प्रयुक्त होकर ही उनकी प्रासंगिकता व सार्थकता सिद्ध होती है। हिन्दी में क्रिया शब्द 'विकारी' शब्दों की श्रेणी में आते हैं अर्थात कर्ता या कर्म के पुरुष, लिंग, वचन के साथ–साथ काल के अनुसार एक ही क्रिया शब्द के भिन्न–भिन्न रूप प्रयुक्त होते हैं। निम्न उदाहरणों से 'क्रिया' के विकारी होने को स्पष्ट किया जा सकता है।

मैं एक फल तोड़ता हूँ।
मैं (उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग)....तोड़ता हूँ।
राधा एक फल तोड़ती है।
राधा (अन्य पुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग)....तोड़ती है।
वे फल तोड़ रहे हैं।
वे (अन्य पुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग).... तोड़ रहे हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'तोड़ना' क्रिया शब्द के विविध रूप क्रमशः कर्ता के पुरूष, लिंग, वचन तथा काल के अनुसार प्रयुक्त हुए हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि क्रिया पद की पूर्णता अन्य सहायक पदों यथा हूँ, है, रहे हैं, चुका है, था आदि से प्रकट होती है। क्रिया पदों के पूरक के रूप में प्रयुक्त इन सहायक पदों को **'सहायक क्रिया'** के नाम से अभिहित किया जाता है। वस्तुतः क्रिया के काल, वचन, पुरुष, लिंग आदि का निर्धारण इन सहायक क्रियाओं के द्वारा होता है। मूल क्रिया शब्दों को संस्कृत की तर्ज पर प्रायः 'धातु' भी कहा जाता है। हिंदी में सामान्यतया मूल क्रिया शब्द (धातु) को 'ना' प्रत्यय के साथ लिखा जाता है।

जैसे– पढ़ (पढ़ना)
उठ (उठना)
खा (खाना)
लिख (लिखना)
चढ़ (चढ़ना)
खुल (खुलना)

उक्त के अतिरिक्त संज्ञा या विशेषण शब्दों के साथ करना या होना लगाकर भी क्रियापद निर्मित या व्यक्त किए जाते हैं। जैसे सहन–(सहना, सहन करना) मना–मना करना, खरीद– खरीदना, खरीदारी करना, रोष–रुष्ट होना/करना, प्रसन्न–प्रसन्न होना/करना, स्नान करना, पूरा करना, पढ़ाई करना (पढ़ना), खाली करना, अभ्यास करना आदि।

इसी प्रकार अन्य शब्दों विशेषकर संज्ञा व विशेषण शब्दों के साथ किसी क्रिया शब्द को जोड़ने से भी एकल क्रिया पद का निर्माण होता है। जैसे खाना बनाना/खाना पकाना, पानी देना, दुख पहुँचाना आदि।

हिन्दी के क्रियापद मूल शब्द (धातु) में प्रत्यय लगाकर, सहायक क्रिया का प्रयोग करने से या संज्ञा व

विशेषण शब्दों के साथ किसी क्रिया पद जैसे करना या होना को संयुक्त करने से निर्मित होते हैं। क्रियापदों के मूल में निहित शब्द 'धातु' के नाम से भी जाने जाते हैं। इन्हीं मूल शब्दों में प्रत्यय यथा ना, आ, ई, ए आया आदि लगाकर क्रिया शब्दों का निर्माण होता है तथा कुछ सहायक पदों यथा रहा है, है, था, चुका है/था, के सहयोग से भी क्रिया रूप निर्मित होते हैं। जहाँ सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है वहाँ मूल शब्द व सहायक क्रियाएँ मिलकर क्रियापद का कार्य करते हैं। मूल क्रिया शब्दों से युक्त प्रत्यय व सहायक क्रिया पदों की काल, वृत्ति व पक्ष निर्धारण में विशेष भूमिका होती है। जैसे आ, ए प्रत्यय से भूतकाल ता है/ती है/ते है, रहा है/ रहे हैं/रही है से वर्तमान काल तथा गा/गे/गी से भविष्यकाल का बोध होता है।

क्रिया के भेद

'कर्म की अपेक्षा' के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–**अकर्मक एवं सकर्मक क्रिया।**

वाक्य में प्रयुक्त पदों का क्रिया पद से कोई न कोई संबंध होता है। इसी संबंध के कारण ही 'क्रिया' भाषा का प्राण तत्व है। क्रिया से किसी रूप में संबंधित पद '**कारक**' कहलाते हैं जो विभक्ति चिह्नों या इनके बिना वाक्य में उपस्थित रहते हैं। उदाहरणतया किसी वाक्य में–

1	क्रिया पद से **कौन/किसने** का संबंध रखने वाला पद	ने, –	कर्ता कारक
2	क्रिया पद से **क्या (अप्राणीवाचक) व किसे/किस को (प्राणीवाचक)** का संबंध रखने वाला पद	को	कर्म कारक
3	क्रिया पद से **किससे/किसकी सहायता से/ किसके द्वारा** का संबंध रखने वाला पद	से	करण कारक
4	क्रिया पद से **किसके लिए/क्यों/प्रयोजन**का संबंध रखने वाला पद	के, द्वारा	संप्रदान कारक
5	क्रिया पद से **(के कारण) अलग होने/पृथकत्व** का संबंध रखने वाला पद	से	अपादान कारक
6	क्रिया पद से संबंध रखने वाले पदों का परस्पर संबंध बताने वाले पद	का, के, की	संबंध कारक
7	क्रिया पद से कार्य होने का **आधार/स्थल** का संबंध रखने वाला पद	में, पर	अधिकरण कारक
8	क्रिया पद से **संबोधन/आह्वान** का संबंध रखने वाला पद	हे, अरे, ओ	संबोधन

अकर्मक (Intransitive) क्रिया

ऐसे क्रिया पद जिनके लिए कर्म कारक की अपेक्षा नहीं है अर्थात् क्रिया पद के लिए 'क्या' या 'किसे/किसको' का प्रश्न करने पर उत्तर में किसी संज्ञा पद/शब्द की अपेक्षा न हो तो ऐसे क्रिया पद अकर्मक कहलाते हैं। जैसे

उसकी बात सुनकर मैं हँसने लगा।	...(क्या) (हँसने लगा)ग	अपेक्षित पद 'कौन' (कर्ता)
दोपहर घर पहुँचते ही मैं सो गया था।	...(क्या) (सो गया था)ग	अपेक्षित पद कौन (कर्ता)
आकाश में अनेक पक्षी उड़ रहे हैं।	...(क्या) (उड़ रहे हैं)ग	अपेक्षित पद कौन (कर्ता)
वह प्रतिदिन स्कूल जाता है।	...(क्या) (जाता है)ग	अपेक्षित पद कौन (कर्ता)

उपयुर्क्त वाक्यों में प्रयुक्त 'हँसने लगा', 'सो गया था', 'उड़ रहे हैं' तथा 'जाता है' क्रिया पदों के लिए क्या (अप्राणीवाचक) या किसे/किसको (प्राणी वाचक पद) का कोई प्रसंग उपस्थित नहीं होता है। अतः ये क्रियापद 'अकर्मक क्रिया' के उदाहरण हैं।

सकर्मक (Transitive) क्रिया

वाक्य में प्रयुक्त ऐसे क्रिया पद जिन्हें 'कर्म' की अपेक्षा होती है अर्थात क्रिया पद के 'क्या' का उत्तर कोई अप्राणीवाचक (संज्ञा) पद अवश्य उपस्थित होना चाहिए अन्यथा वाक्य अपूर्ण रहता है ऐसे क्रिया पद 'सकर्मक क्रिया' कहलाते हैं। कुछ सकर्मक क्रिया पद ऐसे होते हैं जिन्हें 'क्या' के बाद किसे/किसको वाले प्राणी वाचक संज्ञा पद की भी अपेक्षा रहती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि केवल 'क्या' की अपेक्षा वाला क्रिया पद '**एककर्मक**' तथा क्या के साथ–साथ किसे/किसको की अपेक्षा वाला क्रिया पद '**द्विकर्मक**' होता है। पहला मुख्य या प्रत्यक्ष कर्म तथा दूसरा गौण या अप्रत्यक्ष कर्म होता है। निम्न उदाहरणों से सकर्मक क्रिया पदों को सरलता से समझा व पहचाना जा सकता है।

मैं अपने पिताजी को (किसको) पत्र (क्या) लिख रहा हूँ।

वह एक पुस्तक (क्या) पढ़ रहा था।

उसने एक गाना (क्या) गाया।

शीला ने हमें स्वादिष्ट खाना (क्या) खिलाया।

टी.वी. पर मैं अपना मनपंसद 'सीरियल' (क्या) देख रहा था।

पहले वाक्य में 'लिख रहा हूँ' क्रिया पद के लिए मुख्य व गौण कर्म उपस्थित हैं जो क्रमशः अप्राणीवाचक (पत्र) तथा प्राणीवाचक (पिताजी) पद हैं अतः यह द्विकर्मक क्रिया पद का उदाहरण है। शेष वाक्यों में मुख्य कर्म की ही अपेक्षा है इसलिए इनमें निहित क्रियापद एककर्मक हैं। कुछ सकर्मक क्रियाएँ प्रयुक्ति संदर्भ के अनुसार अकर्मक भी हो सकती हैं जैसे –

1. मेरा पुत्र पुस्तक पढ़ रहा है। (सकर्मक क्रिया)
   मेरा पुत्र भी इसी विद्यालय में पढ़ता है। (अकर्मक क्रिया)
2. वह बैडमिंटन खेलता है। (सकर्मक क्रिया)
3. वह प्रतिदिन एक घंटे खेलता है। (अकर्मक क्रिया)

सकर्मक का अकर्मक क्रिया में रूपांतरण

राधा मशीन चलाती है।	(सकर्मक क्रिया)
मशीन चलती है।	(अकर्मक क्रिया)
वह पतंग उड़ा रहा है।	(सकर्मक क्रिया)
पतंग उड़ रही है।	(अकर्मक क्रिया)
बूंदे गिर रही हैं	(अकर्मक क्रिया)
वह गाड़ी चला रहा है।	(सकर्मक क्रिया)
गाड़ी चल रही है।	(अकर्मक क्रिया)

अतः स्पष्ट है कि अकर्मक क्रियाएँ सकर्मक रूप में तथा विलोमतः सकर्मक क्रियाएं अकर्मक रूप में व्युत्पन्न की जा सकती हैं यथा

हँसना	⇌	हँसाना
चलना	⇌	चलाना
उड़ना	⇌	उड़ाना
रोना	⇌	रुलाना

संरचना के आधार पर भी क्रिया पदों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है।

संयुक्त क्रिया

जब दो भिन्न–भिन्न क्रियापद मिलकर एक ही क्रिया पद का कार्य करें और दूसरा क्रियापद, मूल क्रिया पद के अर्थ को विशिष्टता प्रदान करता हो तो वह संयुक्त क्रिया पद कहलाता है। मूल क्रिया पद के साथ संयुक्त होने वाला दूसरा क्रिया पद अपना स्वयं का अर्थ छोड़कर पहले वाले मुख्य क्रिया पद को विशिष्टता प्रदान करता है तथा मूल क्रिया पद के अर्थ में रंजक तत्त्व का समावेश कर देता है। इसलिए संयुक्त क्रिया में मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त ऐसे क्रिया पद रंजक क्रिया के नाम से भी जाने जाते हैं। ये रंजक क्रियाएँ कथन की भंगिमा को बदल देती हैं। संयुक्त क्रियाएं हिंदी भाषा की अन्यतम विशेषता है जिनका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है।

निम्न उदाहरणों से संयुक्त क्रिया और उनके कारण वाक्य/कथन में उत्पन्न हुई रंजकता को स्पष्ट किया जा सकता है –

1. अचानक मुझे दिल्ली **जाना पड़ा।** (जाना, पड़ना)
2. कुछ ही देर में वह मेरे घर **आ धमका।** (आना, धमकना)
3. उसने अपना काम **कर दिया।** (करना, देना)
4. थोड़ी देर में रमेश भी वहाँ **आ गया।** (आना, जाना)
5. देखते ही देखते उसका पैर **फिसल गया।** (फिसलना, जाना)
6. एकाएक वह बिस्तर से **उठ बैठा।** (उठना, बैठना)
7. बलशाली प्रतिद्वन्द्वी को देखते ही वह **भाग खड़ा हुआ।** (भागना, खड़ा होना)
8. उपद्रवियों ने कई बसों को आग **लगा दी** (लगाना, देना)
9. कुछ देर ठहरकर वह यहाँ से **चला गया।** (चलना, जाना)
10. असावधानी के कारण वह बस से **गिर गया।** (गिरना, जाना)
11. घर से निकलते ही आसमान में बादल **घिर आए।** (घिरना, आना)
12. उसे क्यों **जाने दिया** ?(जाना, देना)
13. देखते–देखते गाड़ी **चल दी।** (चलना, देना)

प्रेरणार्थक क्रिया

क्रिया पद के जिस रूप से कार्य के करवाने अर्थात् कार्य प्रेरणा का बोध हो वह प्रेरणार्थक क्रिया पद कहलाता है। प्रेरणार्थक क्रिया मूल क्रिया से व्युत्पन्न क्रिया रूप है जैसे –

वह अपने कपड़े धुलवा रहा है।

उसने अपनी खोई पुस्तक को सब जगह ढुंढवाया।

अध्यापक ने सबको खाना खिलाया/खिलवाया।

वह भवन निर्माण केलिए पत्थर डलवा रहा है।

अनूप, नन्दन से पत्र लिखवा रहा है।

उपुर्यक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि क्रिया वस्तुतः किसी अन्य कर्ता के द्वारा संपन्न होती है लेकिन प्रेरक कर्ता की वाक्य में मुख्य भूमिका होती है। कुछ प्रेरणार्थक क्रियाओं के उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

सामान्य क्रिया	व्युत्पन्न क्रिया	प्रेरणार्थक रूप
उठना	उठाना	उठवाना
कटना	काटना	कटवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
हटना	हटाना	हटवाना
बढ़ना	बढ़ाना	बढ़वाना

समस्त क्रिया पद

जब दो भिन्न क्रिया पद मिलकर एक पद के रूप में प्रयुक्त किए जाएं तथा अपने–अपने अर्थ भी संधारित करें तब ऐसे पद समस्त क्रिया पद कहलाते हैं। संयुक्त क्रिया पदों में भी भिन्न क्रिया पद होते हैं लेकिन वे मुख्य क्रिया के अर्थ को पुष्ट करते हैं, भिन्न–भिन्न अर्थ नहीं। उदाहरणतया

तमतमाता विद्रोही चेहरा सामूहिक **देखना – दिखाना** चाहता हूँ। ('नागझिरी' कविता से, कवि चंद्रकांत देवताले)

आजकल वह मेरे पास **उठता–बैठता** है।

इसी तरह **मिलना–जुलना**, **घूमना–फिरना, खेलना–खिलाना, पढ़ना–लिखना, खाना–पीना** आदि समस्त क्रिया पद के उदाहरण हैं जो द्वन्द्व समास के अंतर्गत भी परिगणित किए जाते हैं।

समापिका व असमापिका क्रिया

वाक्य में अर्थ या भाव को पूर्णता प्रदान करने वाली क्रिया समापिका क्रिया तथा ऐसा क्रिया पद जो वाक्य में अपूर्ण क्रिया के रूप में अन्यत्र प्रयुक्त होता है असमापिका क्रिया के नाम से जाना जाता है। जैसे –

मैंने आसमान में दो हवाईजहाज <u>उड़ते हुएदेखे।</u>

<u>खेलते हुए</u> बच्चों को मैंने सहायता के लिए <u>पुकारा</u>।

<u>देखते–देखते</u> वह गाड़ी से <u>कूद पड़ा।</u>

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित पद क्रमशः असमापिका व समापिका क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। वस्तुतः असमापिका क्रिया 'क्रिया विशेषण' के रूप में प्रयुक्त होती हैं और क्रिया विशेषण अविकारी शब्दों

(अव्यय) की श्रेणी में होते हैं। अतः असमापिका क्रिया को क्रिया पद के अंतर्गत समझना त्रुटिपूर्ण है।

पूर्वकालिक तथा तात्कालिक क्रिया

मुख्य क्रिया पद से पूर्व एक और क्रियापद जिससे यह बोध होता है कि कोई कार्य समाप्त हुआ है तथा तत्काल मुख्य क्रिया से संपन्न होने वाले दूसरे कार्य का बोध होता है तब ऐसे क्रिया पद क्रमशः पूर्वकालिक एवं तात्कालिक क्रिया पद कहलाते हैं। पूर्वकालिक क्रिया पद मूल क्रिया शब्द में 'कर' या 'ते' प्रत्यय ही लगाने से बनते हैं।

वह पढ़कर सो गया।
वह पढ़ते ही सो गया।

असमापिका क्रिया की भाँति पूर्वकालिक क्रिया पद भी क्रिया विशेषण के अंतर्गत आते हैं।

क्रियात्मक संज्ञा

जब क्रिया शब्द संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं, तब उन्हें क्रियात्मक संज्ञा के नाम से जाना जाता है।

जैसे – **तैरना** एक अच्छा व्यायाम है।
हँसना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

'क्रिया पद' से सम्बन्धित अन्य व्याकरणिक कोटियाँ

काल

वाक्य में प्रयुक्त क्रिया एवं सहायक क्रिया पदों से कार्य करने, होने आदि के समय का बोध होता है जिसे हिंदी व्याकरण में 'काल' नाम से जाना जाता है। क्रिया पदों के संदर्भ में 'काल' को मुख्यतः तीन भेदों तथा अनेक उपभेदों में निम्न प्रकार विभाजित किया जाता है।

वर्तमान काल	सामान्य वर्तमान	वह प्रातः काल घूमता है।
	अपूर्ण वर्तमान	वह टी.वी. देख रहा है।
	संदिग्ध वर्तमान	वे आते ही होंगे।
भूतकाल	सामान्य भूत	उसने अच्छे अंकों से परीक्षा पास की।
	आसन्न भूत	वह खाना खा चुका है या उसने गृह कार्य पूरा कर लिया है।
	पूर्ण भूत	उसने प्रतिद्वन्द्वी को धूल चटा दी थी।
	अपूर्ण भूत	वह खाना बना रही थी।
	संदिग्ध भूत	उसने पुस्तक पढ़ ली होगी/ पढ़ी होगी।
	हेतु–हेतुमद् भूत	यह वह मेहनत करता तो पास हो जाता।
भविष्य काल	सामान्य भविष्य	वे फिल्म देखने जाएंगे।
	संभाव्य भविष्य	कदाचित वह कल पहुंचेगा।

पक्ष (Aspect)

'पक्ष' का अर्थ है क्रिया की संरचनात्मक प्रकृति जिसके आधार पर कार्य के पूर्ण होने, अपूर्ण रहने, नित्यता, निरंतरता या अवस्था–स्थिति आदि पक्षों का बोध होता है। उदाहरण के रूप में –

1. मैं प्रतिदिन घूमने जाता हूँ/मैं वॉलीबॉल खेलता था। (नित्यता बोधक या आवृत्ति)
2. बच्चे पढ़ रहे हैं/खेल रहे थे। (निरंतरता सूचक)
3. मैनें पुस्तक पढ़ ली है/पढ़ चुका था (पूर्णता बोधक)
4. वह एक अध्यापक है। (स्थिति/अवस्था सूचक)

पक्ष के निर्धारण में भी सहायक क्रियाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पक्ष 'काल' से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है।

वृत्ति

क्रिया के जिस रूप से वाक्य के रूप में व्यक्त कथन की भंगिमा का परिचय मिलता है या वक्ता की मनोवृत्ति का पता चलता है उसे वृत्ति (डववक) कहा जाता है। वस्तुतः वाक्य में आज्ञा, अनुरोध, इच्छा, संभावना, बाध्यता, सामर्थ्य, निश्चयात्मकता प्रश्न, संकेत आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले क्रिया पद 'वृत्ति' का निर्धारण करते हैं। जैसे –

1. तुम यहाँ से चले जाओ/जा सकते हो। (आज्ञार्थक)
2. काश! तुम यहाँ होते/ईश्वर तुम्हारा भला करे! (इच्छार्थक)
3. मैं यह परीक्षा अच्छे अंको से पास कर सकता हूँ। (सामर्थ्य)
4. मुझे उनकी बात माननी पड़ी। (बाध्यता)
5. अब गाड़ी नहीं मिलेगी। (निश्चयात्मक)
6. तुम कल स्कूल जाओगे? (प्रश्न सूचक)
7. यदि वह पढ़ता तो पास हो जाता। (संकेत)
8. शायद वह यहाँ आए। (संभावना)

वाच्य

क्रियापद के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि वह कर्ता का अनुसरण करती है, कर्म का अनुसरण करती है या स्वयं भाव के रूप में अपना अनुसरण करती है, वाक्य का वह रूप वाच्य कहलाता है। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं –

कर्तृवाच्य

क्रिया का रूप जब कर्ता का अनुसरण करता है जैसे–मां खाना बनाती है।

कर्मवाच्य

क्रिया का रूप जब कर्म का अनुसरण करता है–जैसे मांके द्वारा खाना बनाया जाता है। सकर्मक क्रिया वाले वाक्य ही कर्मवाच्य के रूप में रूपान्तरित हो सकते हैं।

भाववाच्य

क्रिया जब स्वयं का (भाव रूप में) अनुसरण करती है। भाव वाच्य में अकर्मक क्रिया होती है। भाववाच्य में प्रयुक्त क्रिया पद सदैव अन्य पुरूष एकवचन एवं पुल्लिंग रूप में होता है।

जैसे–हंसा जाता है, खेला जाता है, रोया जाता है।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य व भाववाच्य का रूपांतरण निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है।

राम पुस्तक पढ़ रहा है।
– कर्तृवाच्य
राम से (के द्वारा) पुस्तक पढ़ी जा रही है
– कर्मवाच्य
मैंने पत्र लिखा/लिखे
– कर्तृवाच्य

मुझसे पत्र लिखा गया/लिखे गए
– कर्मवाच्य
पक्षी आसानी से उड़ सकते हैं।
– कर्तृवाच्य
पक्षियों से आसानी से उड़ा जा सकता है।
– भाव वाच्य
मैंने पाठ याद कर लिया है।
– कर्तृवाच्य
मेरे द्वारा (मुझसे) पाठ याद कर लिया गया है।
– कर्मवाच्य
मुझसे दौड़ा नहीं जाएगा।
– भाव वाच्य
मैं नहीं दौड़ सकता।
– कर्तृवाच्य

अन्वय (Concordance)–

अन्वय से तात्पर्य क्रिया का सम्यक रूप जो वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा/सर्वनाम शब्दों अर्थात कर्ता या कर्म के वचन, पुरुष, लिंग आदि के अनुसार हो तथा अन्य पदों का क्रम भी व्याकरण के नियमों के अनुरूप हो।

1. जब कर्ता पद बिना विभक्ति चिह्न (परसर्ग) के हो तब निर्धारित क्रिया का रूप कर्ता के पुरुष, लिंग, वचन के आधार पर होता है।
   राम फल खाता है।
   राम (एकवचन, पुल्लिंग) फल खाता है।
   राम फल खाएगा।
   वे फल खाएंगे।
   वह फल खा चुकी है।
2. जब कर्ता शब्द विभक्ति चिह्न (परसर्ग) के साथ हो तब क्रिया का रूप कर्म के पुरुष, वचन तथा लिंग के आधार पर निर्धारित होता हे।
   राम ने फल खाया।
   राम ने फल खाए।
   राम ने फल (बहुवचन, पुल्लिंग) खाएं।
3. द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में मुख्य या प्रत्यक्ष कर्म के अनुसार क्रिया का रूप निर्धारित होता है।
   राम ने मोहन को एक पुस्तकप्रदान की।
   राम ने मोहन को एक पुस्तक (एकवचन, स्त्रीलिंग) प्रदान की।
4. जब दो से अधिक मुख्य 'कर्म' विद्यमान हो तब क्रिया पद के निकटतम 'कर्म' के अनुसार क्रिया रूप का निर्धारण होता हैं

राम ने 5 पैंसिलें, एक दवात तथा चार पुस्तके खरीदीं।

राम ने 5 पैंसिलें, चार पुस्तकें तथा एक दवात खरीदी।

राम ने 5 पैंसिलें, चार पुस्तकें तथा एक पैन खरीदा।

कतिपय अशुद्ध क्रिया रूप

1. करा– मैंने यह काम नहीं करा (अशुद्ध रूप) – मैंने यह काम नहीं किया। (शुद्ध रूप)
2. क्रिया के ओकारांत रूप –आज्ञार्थक वाक्यों में प्रयुक्त ओकारांत रूपों को छोड़कर अन्यथा ओकारांत रूप का प्रयोग अशुद्ध होता है।
   'करो या मरो' (शुद्ध रूप)

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो (अशुद्ध रूप)
निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें कीजिए (शुद्ध रूप)
   इसी प्रकार पढ़ो (केवल आज्ञार्थक वाक्यों में) – पढ़ें, पढ़िए (अन्य सभी वाक्यों में)।
   भेजो – भेजें, भेजिए
   देखो – देखें, देखिए
   चलो– चलें, चलिए
3. प्रेरणार्थक क्रिया भी प्रायः अशुद्ध रूप में प्रयुक्त की जाती हैं।

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**
करावें	कराएं, करवाएं
पढ़ावें	पढ़ाएं, पढ़वाएं
दिखावें	दिखाएं, दिखवाएं
चलावें	चलाएं, चलवाएं

   i. कृपया एक कार्मिक उपलब्ध कराने का श्रम करावें। (अशुद्ध रूप)
   ii. कृपया एक कार्मिक उपलब्ध कराने/करवाने का श्रम करें। (शुद्ध रूप)
4. कुछ क्रिया रूपों के बहुवचन व स्त्रीलिंग रूप अशुद्ध रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**
गायें	गाएं
खायें	खाएं
धोयें	धोएं
किये	किए
गये	गए
गयी	गई
आयी	आई
सिखायी	सिखाई

i. खेत में गायें चर रही हैं।
   (संज्ञा शब्द गाय का बहुवचन रूप– गायें)
ii. कृपया एक मधुर गाना गाएं।
   (गाना क्रिया का बहुवचन रूप– गाएं)

मुहावरे(Phrasal Verbs)

सामाजिक व्यवहार में कुछ व्युत्पन्न क्रियाएँ अपने मूल अर्थ की अपेक्षा लाक्षणिक या व्यंजक अर्थ को प्रकट करती हैं, ऐसे क्रिया रूप हिंदी में मुहावरों के रूप में भी जाने जाते हैं। जैसे –

कान भरना। (चुगली करना)
हवा से बातें करना (तेज दौड़ना)
आकाश–पाताल एक करना (बहुत मेहनत करना)
नाकों चने चबाना (परेशान करना)
धूल चटाना (पराजित करना)
उल्लू बनाना (मूर्ख बनाना)

निष्कर्ष

हिन्दी के क्रियापद संरचना की दृष्टि से तो रोचक हैं ही प्रयुक्ति की दृष्टि से भी पर्याप्त विविधता लिए हुए हैं। भाषा में, चाहे वह बोलचाल की भाषा हो या लिखित रूप, सही क्रिया रूपों का प्रयोग उसके लालित्य को बढ़ाता है तथा अर्थ या भाव संप्रेषण को स्पष्ट करता है। अतः हिन्दी के क्रिया पदों का समग्र विवेचन–विश्लेषण

नितांत आवश्यक है ताकि भाषा का सही व मानक रूप जाना व समझा जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिन्दी व्याकरण – पं. कामताप्रसाद गुरु, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2013*
2. *हिन्दी भाषा – डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009.*
3. *हिन्दी व्याकरण और व्यवहार – सं. सत्येन्द्र वर्मा, एन. सी.ई.आर.टी. प्रकाशन, 2003.*
4. *हिन्दी व्याकरण एवं रचना – मा.शि.बोर्ड, राजस्थान, अजमेर (पाठ्य पुस्तक) प्रबोध प्रकाशक राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर, 2016.*
5. *हिंदी भाषा का उद्गम और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1995.*
6. *मानक हिंदी व्याकरण – डॉ. कमल सत्यार्थी, डॉ. रवि प्रकाश गुप्त, दीप्ति प्रकाश, सरस्वती हाउस प्रा.लि., दरियागंज, नई दिल्ली*
7. *हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण – डॉ. भोलानाथ तिवारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1985.*
8. *हिन्दी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद.*
9. *सरल शब्दानुशासन हिन्दी का मौलिक संक्षिप्त व्याकरण – आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, नागरीप्रचारणी सभा, वाराणसी 2015.*
10. *मानक हिन्दी व्याकरण – आचार्य रामचन्द्र वर्मा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1970*